इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

परिचय

आज बहुत से लोग मसीही होने का दावा करते है, परन्तु उनकी जीवनशैलियों के समान ही उनकी बोधिता बदलती रहती है। एक मसीही होने का क्या अर्थ होता है? यदि हम मसीहत की उत्पत्तियों (शुरूआत) की ओर वापस जाए और मसीह के चेलों के जीवनों को देखे तथा उन लोगों के जीवनों को भी जिन्हें उन्होने (चेलों ने) प्रशिक्षण दिया, तो हम परमेश्वर के साथ उनके संबंध को ज्वलंत और गतिशील रूप में देखते है। दूसरों की सेवा करने वाले समूहों में घनिष्ठता (एकता); प्रार्थना और आराधना करने के लिए समर्पित जीवनों को हम देखते है और व्यवहार (चरित्र) में उस बदलाव को देखते है जो उनके अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा उत्पन्न हुआ था। ये सभी आरंभिक विश्वासी मसीहत की गहरी और उच्चतम् सच्चाई (वास्तविकता) के साथ बंधे हुए थे। स्वंय यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, उसके लोगों का उद्धारकर्त्ता तथा जातियों (राष्ट्रों) का प्रभु है। मसीह के सच्चे ज्ञान के बिना मसीहत को समझा नहीं जा सकता। और उसके साथ सहभागिता के बिना इसे जिया नहीं जा सकता। यह सहभागिता उन्हें प्रदान की जाती है जो उसको पुकारते है क्योंकि वह पृथ्वी पर एक ही समय पर परमेश्वर और सिद्ध मनुष्य के रूप में कार्य करता है। उसने हमारे स्थान पर अपने आपको बलिदान करके व्यवस्था की मांगों को सिद्ध रूप से पूरा किया इस प्रकार से वह हमें बचाता है और हमारे लिए मध्यस्था करता है कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति में लेकर आएं। शायद आप भी यीशु मसीह के विषय में एक गहन समझ (गहरे ज्ञान) की और उसकी उपस्थिति के एक (निजी) व्यक्तिगत ज्ञान की इच्छा करते होंगे। इब्रानियों को पुस्तक इन दोनों रहस्यों से पर्दा उठा सकती है और सच्चे परमेश्वर के साथ घनिष्ठ चलन/जीवन की ओर आपकी अगुवाई कर सकती है, यह वही घनिष्ठता है जो उन संतों द्वारा बताई है जो हमसे पहले गए है।

लेखक

इब्रानियों की पुस्तक अपनी रचना और शैली में अद्वितीय है और नया नियम में केवल यही एक पुस्तक है जिसका लेखक अज्ञात है अर्थात् जिसके विषय में पता नहीं है। कुछ लोग बरनाबास का नाम सुझाते है जो कि एक लेवी था और यहूदी अनुष्ठानिक (संस्कार) रीति से परीचित था। बरनाबास नाम का अर्थ है 'प्रोत्साहन' जो कि बिल्कुल इसके उपयुक्त बैठती है क्योंकि उसका जीवन और इब्रानियों की पुस्तक मुख्य रूप से प्रोत्साहन देनेवाले ही है (प्रेरितों 4:36, 9:24; 13:2)। अन्य लोग अपुल्लोस था उसके शिक्षक प्रिसकिल्ला और अक्विला (प्रेरितों 18:24–26) का नाम सुझाते है। सबसे महत्त्वपूर्ण विचार/राय और जिस पर कई मसीहियों द्वारा आज विश्वास किया जाता है, वो यह है कि प्रेरित पौलुस इसका लेखक था, परन्तु निश्चित रूप इसके बारे में केवल परमेश्वर जानता है।

श्रोतागण/दशक

इब्रानियों को उन यहूदी विश्वासियों के लिए लिखा गया था जिन्होने यहूदी धर्म को छोड़कर मसीह गवाहों की गवाही के अनुसार मसीह के विश्वास में आए थे। इन आरंभिक विश्वासियों ने सुसमाचार के लिए पीड़ाओं को सहा था, उनमें से कई लोग सताव के कारण यरूशलेम को छोड़कर भाग गए थे परन्तु अब वे अपने विश्वास को त्यागकर यरूशलेम वापस लौटने के खतरे में ये। उनके पास बहुत से प्रश्न और कुछ शंकाए (दुविधाएं) थी। डर, अज्ञानता, आत्मिक अपरिपक्वता और कड़े सताव के कारण इनमें से कुछ विश्वासी शंकापूर्ण (सदेहपूर्ण) और कमज़ोर इच्छाशक्ति वाले थे। इसके अतिरिक्त वे लोग यहूदी परम्पराओं जैसे कि पवित्र दिन, मंदिर में बलिदानों को चढ़ाना, याजकपद का कार्यालय और सब्त का दिन के भविष्य के विषय में अनिश्चित थे। उन्हें इस विषय पर स्पष्टता की जरूरत थी कि यीशु कौन था और उसने उनके लिए क्या किया था। उन्हें मसीह के कार्य और पुराना नियम के वचनों की

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

पूर्णता के बीच के संबंध को समझाने की ज़रूरत थी। अन्ततः उन्हें इस बात की पुष्ठिकरण की भी ज़रूरत थी कि यीशु के प्रति उनकी भक्ति सचमुच उन परीक्षाओं/सतावों से बढ़कर है जिनका वो सामना कर रहे थे। इब्रानियों की पुस्तक ने यहूदी लोगों के लिए इन महत्त्वपूर्ण विषयों के ऊपर स्पष्टीकरण दिया, यीशु की सर्वोच्चता को उजागर किया जो कि हमारा सिद्ध महायाजक और सिद्ध बलिदान है (सभी के लिए एक ही बलिदान)।

समय

इब्रानियों को कब लिखा गया था? इस पुस्तक के लिए कोई निश्चित तिथि नहीं दी जा सकती परन्तु बहुत से लोग इस बात पर सहमत होते है कि इसे 95 ईसवीं से पहले लिखा गया था। रोम को एक अति संभावित स्थान माना जा सकता है क्योंकि इब्रानियों 13:24 में इटली के रहने वाले अपने अभिनन्दन (अभिवादन) को उन्हें भेजते है। एक तथ्य जो कि निश्चित है, यह पुस्तक उस दौरान लिखी गई थी जब आराधनालयों और विकसित हो रही मसीही मण्डलियों (समुदायों) के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा था।

इब्रानियों की पुस्तक में बहुत सी चेतावनियाँ आई है। कुछ लोगों ने समस्याओं से बचने के लिए अन्य विश्वासियों से मिलना बंद कर दिया था। उन्होने अपने विश्वास की शुरूआत तो अच्छी करी थी परन्तु अब वे वापस मुड रहे थे या पीछे जा रहे थे (5:11, 6:1)। कुछ लोग तो अपने उस अंगीकार से दूर—चले जाने के खतरे में थे, जो एक बार उन्होने किया था। परिपक्वता में बढ़ने के बजाय (5:12) "पाप के छल में आकर कठोर हो जाने" के खतरे में थे (10:35)। कुछ लोगों ने मसीह में अपने विश्वास की गवाही के कारण सार्वजनिक बेज्जती, सताव, जेल में डाला जाना और यहाँ तक कि सम्पत्ति को खोने जैसी परीक्षाओं का सामना किया (10:32—34)। उन्हें उनके विश्वास के कारण परिवारों से अलग कर दिया गया। उनकी अब अपनी खुद की कोई सुरक्षा और पहचान नहीं बची थी जो कि मंदिर के निर्माण के दौरान उन्हें मिली थी, इसलिए अब वे घरों में ही इकट्ठा हुआ करते थे। हर दिशा से उन्हें खींचा जा रहा था और हर जगह से उन्हें चुनौती मिल रही थी।

ऐसी ही चीज़ों को हम आज भी देखते है। यह संसार भटकाव, तनाव और पीड़ाओं को लेकर आता है जो कि हमारे आत्मविश्वास को यीशु में उन वायदों के प्रति दबाता/कुचलता है जो उसने अपने लोगों से किये थे। आप शायद इन आरंभिक यहूदी मसीहियों के साथ पहचाने जाए। क्या एक विश्वासी के रूप में जीवन बहुत कठिन है? क्या आप अपने विश्वास में निराश या निरूत्साहित हो गये है? इब्रानियों हमें यह सिखाता है कि, मसीह मे ंहम शांति और आनन्द के साथ इन अनिश्चित और कठिन समयों में बने रह सकते है।

विषय

इब्रानियों की किताब का सबसे व्यापक/सम्पूर्ण विषय विश्वास है। इस पुस्तक के पहले 10 अध्याय मसीह को हमारे विश्वास का मुख्य विषय और लंगर के रूप में बताते है। यदि हम यीशु मसीह पर केन्द्रित रहे और जो वह है, उसका चरित्र और विशेषताओं (गुण) को देखे, तो जो हम विश्वास करते है उसमें हम मजबूत बने रहेंगे और इस बात को जान लेंगे कि वह हमें सुरिक्षत रूप से थामे रखता है। हमारे जीवन का जो भी मुख्य केन्द्र है, मसीह उससे कही बेहतर है। वह सभी अगुवों, रीतियों और धार्मिक मूल्यों के ऊपर सर्वोच्च है। वह परमेश्वर का सिद्ध प्रकाशन (उसको दिखाने का) है, पाप के लिए सम्पूर्ण और अंतिम बलिदान, दयालु और समझदार मध्यस्थ और अनन्त जीवन के लिए एकमात्र मार्ग है।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

अध्याय 11–13 में विश्वास को हमारे लिए इस प्रकार से परिभाषित किया गया है, "आशा की हुई वस्तुओं का निश्चस और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण।" और हमें उन संतों का एक लेखा दिया गया है जो हमे पहले आए थे। वे हमारे समान ही साधारण पुरूष और स्त्रियाँ थे, परन्तु हम उनके विश्वास पर अब भी अचम्भा करते है। उन्होने परमेश्वर का अनुभव किया, उसका जो जीवन उनके अंदर था, वे उसकी गहराई में गए। उन्होने एक असाधारण (अद्‌भूत) परमेश्वर पर भरोसा किया और इसने उन्हें जीवन की कठिनाईयों में से विजयी रूप से गुज़रने के योग्य बनाया।

निराशा, पराज्य या शक्तिहीनता के समयों में इब्रानियों महान पुस्तकों में एक है, जिसे हम थामे रख सकते है ताकि जान सके कि वास्तविकता में यीशु है कौन। इसको पढ़ने से, हम इतिहास और जीवन को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने लगते है। आइए हम बिना पीछे हटे पूर्ण रूप से अपने आपको मसीह को सौंप दे! होने पाए कि हम रूप को देखकर नहीं वरन् विश्वास द्वारा चलने वाले बनने का चुनाव करें। यह एक चुनाव हमें वह विश्वास करने वाला बना देगा जो हमारे सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के साथ अनन्तता के साथ रहने पर विश्वास करता है।

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

पाठ एकः अध्याय 1 और 2

विषय वाक्यः हमारे भविष्यद्वक्ता, बलिदानी याजक और अनन्त राजा यीशु की सुनो।

<u>पहला दिनः</u>

इब्रानियों 1:1–4 पढ़े।

1. परमेश्वर पूर्व युग (बीते समयों) में हमसे कैसे बातें करता था?
2. आज परमेश्वर हमसे कैसे बात करता है?
3. पुत्र (यीशु) कौनसी थोड़ी चीज़ो (कार्यों) को करता है?
4. जब यीशु "स्वर्गदूतो से कुछ ही कम (नीचा) किया गया" था, तब उसने मानवजाति के लिए क्या था? (2:9–10)

<u>दूसरा दिनः</u>

इब्रानियों 1:5–14 पढ़े।

1. आयत 8–13 से आप यीशु के बारे में क्या सीखते है?
2. स्वर्गदूत कैसे आराधना करते है (आयत 6)?
3. स्वर्गदूत क्या करते है? आयत 7 और 14 में उन्हें क्या कहा गया है?

<u>तीसरा दिनः</u>

इब्रानियों 2:1–13 पढ़े।

1. यहाँ पर पहली चेतावनी क्या है?
2. परमेश्वर ने किन माध्यमों (तरीकों) से अपने पुत्र की पुष्टि करी थी (आयत 3–4)?
3. आयत 11 में यीशु हमें क्या बुलाता है?

<u>चौथा दिनः</u>

इब्रानियों 2:14–18 पढ़े।

1. यीशु की क्रूस पर मृत्यु द्वारा हम कौनसे शत्रुओं से छुड़ाए (आज़ाद) गए है?
2. परमेश्वर ने यीशु को मानव रूप में पृथ्वी पर क्यों भेजा था?
3. यीशु हमारे बारे में क्या समझता है?

<u>पाँचवा दिनः</u>

इब्रानियों 2:14–18 पढ़े।

1. आपकी पीड़ाओं, दुःखों और परीक्षाओं के बारे में यीशु की समझ किस प्रकार आपकी सहायता करती है?
2. अध्याय 2 में कौनसी आयत (वचन) आपके लिए सबसे ज्यादा मायने रखती है? क्यों?

यीशु, जो हमारा महायाजक है, हमारी दुर्बलताओं में हमें सामर्थ प्रदान करके हमारी सहायता करता है।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

पाठ एकः "मसीह, भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्गदूतों"

विषय	**अध्याय 1 और 2**
मुख्य आयत	**इब्रानियों 1:1–2(a) "पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा–थोड़ा और भांति–भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अंतिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की।"**
विषय वाक्य	**हमारे भविष्यद्वक्ता, बलिदानी याजक और अनन्त राजा यीशु की सुनो**
जीवन सिद्धांत	**यीशु जो हमारा महायाजक है, हमारी दुर्बलताओं में सामर्थ प्रदान करके हमारो सहायता करता है।**

सारांशः इब्रानियों की ये पहली कुछ आयतें यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में कौन है, इसका सबसे सुंदर प्रकटीकरण है। "वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है।" क्योंकि जब हम यीशु को यीशु को देखते है, तो हम परमेश्वर के प्रेम को और हमारे लिए भी जो उसकी सृष्टि है, उसके प्रेम को समझ पाते है। जब हम हमारे सृष्टिकर्त्ता द्वारा सृष्टि को देखते है तो हम प्रत्येक बात के लिए उसके ध्यान को और सुन्दरता के प्रति उसके प्रेम को समझ पाते है जो वह प्रत्येक जीवन को महत्व और मूल्य देता है। उसी आयत में ही हम इस शानदार विवरण (व्याख्या) के बाद क्रूस की तरफ आ जाते है। "जब वह पापों को धोकर............" (आयत 3)। मसीह स्वंय को क्रूस पर एक बलिदान के रूप में चढ़ाकर, उद्धार को प्राप्त करने के लिए पृथ्वी पर आया। इस बलिदान ने पुराना नियम के याजक के बलिदान के क्रम (आदेश) को पूरा किया। यीशु परमेश्वर है और वह स्वर्ग में पिता को दाहिने ओर सम्मान के साथ विराजमान है (भजन संहिता 110:1 और इब्रानियों 1:13)। पूरे पुराना नियम में भी हम इसे परमेश्वर की योजना के रूप में पाते है। यीशु परमेश्वर की इस योजना को पूरा करने के लिए ही आया जैसा कि यीशु ने मत्ती 5:17 में कहा था। वह दाऊद के घराने से आया हुआ वो मसीहा है जो सर्वदा राज्य करेगा (2 शमूएल 7)।

यह बात अब हमें इब्रानियों की पुस्तक की पाँच चेतावनियों में से पहली चेतावनी की ओर लेकर आती है; अनदेखा (नज़रअंदाज) करने का खतरा। सभी को यह ज्ञान है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु के द्वारा हमें अपने पास लाने के लिए क्या किया है, इस बात को नकारना (अस्वीकार करना) या उससे दूर जाना एक गंभीर बात है। वास्तविकता में, यह जीवन और मृत्यु का विषय है। जो लोग हट रहे है या दूर जा रहे है वे वास्तविकता में कभी मसीह के साथ जुड़े हुए ही नहीं थे। शायद उन्होने सत्य को सुना था परन्तु उसे (मसीह) उनके जीवनों के ऊपर अधिकार देने की बात को अनदेखा कर दिया था।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

पाठ दोः अध्याय 3 और 4

विषय वाक्यः अविश्वासी बलवे (विद्रोह) में जीना या विश्राम करना सीखना, यह हमारा चुनाव है।

पहला दिनः

इब्रानियों 3:1–6 पढ़े।

1. इस अध्याय में आएं "विश्वासयोग्य" शब्द को घेरा (गोला) लगाएं।
2. इन आयतों में कौन से शब्द (वचन) यीशु का वर्णन करते है?
3. कौनसे व्यवहारिक तरीके है जिनके द्वारा "हम अपने विचारों" को यीशु पर लगा सकते है?
4. 2:18 को देखते हुए, किस समय पर हमें 'अपने विचारों को' यीशु पर सबसे ज्यादा लगाने की आवश्यकता होगी?

दूसरा दिनः

इब्रानियों 3:7–19 पढ़े।

1. हमें परमेश्वर की आवाज़ का प्रत्युत्तर देने की कब जरूरत है?
2. इस्त्राएलियों ने कितने वर्षों तक पमरेश्वर के चमत्कारों को देखा था?
3. क्या आपको कुछ चमत्कार याद है, जो उन्होने जंगल में देखे थे?
4. परमेश्वर ने उनके अविश्वास का कैसे प्रत्युत्तर दिया?
5. जो हृदय परमेश्वर से दूर हो जाए या मुड़ जाएं, उसका वर्णन करो।
6. क्या आपके जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र है, जिसके विषय में आप परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते है?
7. आपका दल आपके लिए कैसे प्रार्थना करता है?

तीसरा दिनः

इब्रानियों 4:1–13 पढ़े।

1. इन आयतों में हमें क्या चेतावनी दी गई है?
2. एक व्यक्ति किस प्रकार से परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करता है?
3. हमें परमेश्वर की आवाज़ का प्रत्युत्तर देने की कब जरूरत है?
4. क्या आपके पास परमेश्वर के "विश्राम" का वायदा है?
5. एक व्यक्ति परमेश्वर के "विश्राम" में कैसे प्रवेश करता है?

चौथा दिनः

इब्रानियों 4:12–16 पढ़े।

1. इन आयतों से परमेश्वर के वचन की सामर्थ का वर्णन करे।
2. क्या परमेश्वर से कुछ भी छिपा हुआ है?

पाँचवा दिनः

इब्रानियों अध्याय 3 और 4 को फिर से पढ़े।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

1. आपने ऐसा क्या सीखा है जो यीशु मसीह के साथ आपके संबंध के लिए नया था।
2. "अपने विचारों को" यीशु पर लगाना, इसका आप कैसे अभ्यास करेंगे?

हमें अपनी आँखों को दृढ़तापूर्वक यीशु पर लगाना चाहिए, वही हमें वो विश्राम और अनुग्रह दे सकता है जो हमें किसी भी परिस्थिति में विश्वासयोग्य बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

पाठ दोः "मसीह और मूसा"

विषय	अध्याय 3 और 4
मुख्य आयत	इब्रानियों 4:12, "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को और गाँठ–गाँठ और गूदे–गूदे.... और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"
विषय वाक्य	अविश्वासी बलबे (विद्रोह) में जीना या विश्राम करना सीखना, यह हमारा चुनाव है।
जीवन सिद्धांत	हमें अपनी आँखों को दृढ़तापूर्वक यीशु पर लगाना चाहिए, वहीं हमें वो विश्राम और अनुग्रह दे सकता है जो हमें किसी भी परिस्थिति में विश्वासयोग्य बनाएं रखने के लिए आवश्यक है।

सारांशः अध्याय 3 और 4 में दो मुख्य विचार पाएं जाते है। अध्याय 3 पहले विचार के साथ आरंभ होता है जो हमें हमारे विचारों (ध्यान) को यीशु पर लगाने के लिए और अंत तक विश्वासयोग्य बने रहने के लिए कहता है। अध्याय 4 का अंत वापस इस पहले विचार पर ही आता है कि जब हमारा ध्यान यीशु पर होगा तो हम बच जाएंगे या सुरक्षित रहेंगे। "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" परमेश्वर हमारी जरूरतों को पूरा करने में समर्थ (पर्याप्त) है। वह हमारी कमज़ोरी को समझता है और वह हमें विश्वासयोग्यता के साथ ले जाने के लिए योग्य और तैयार (इच्छुक) भी है। इस प्रकार की दृढ़ता केवल वही लोग प्राप्त कर सकते है, जो मसीह द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहते है।

हमारे विश्वास में दृढ़ बने रहने की यह सख्त (गंभीर) बुलाहट एक विश्राम के वायदे के साथ में है, और यह उनके लिए है जो अंत तक धीरज धरेंगे। यह बात दो वाक्याशों (वचनों) के दोहराए जाने के द्वारा दृढ़ की गई है, "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो....." (3:7,15 और 4:7) और "यदि हम अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहे" (3:6,14)। हमें जंगल में उन इस्त्राएलियों के समान नहीं बनना है जिन्होने बहुत से चमत्कारों को देखा तौभी वे नाश हो गए और वायदों को भी प्राप्त नहीं कर पाएं। जो परमेश्वर ने उन्हें करने को कहा, उन्होने वह करने से मना कर दिया तथा अपने ह्रदयों को उससे मोड़ लिया (3:10)। इसी कारण से, अध्याय 4 इस पुस्तक की दूसरी चेतावनी "अविश्वास का खतरा" से आरंभ होता है। जिस प्रकार से इस्त्राएलियों ने वायदे के देश में प्रवेश नहीं किया क्योंकि उन्होने परमेश्वर पर विश्वास करने से मना कर दिया था, तो यदि हमारा विश्वास भी दृढ़ रूप से यीशु पर नहीं लगा हो तो हम भी परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाएंगे।

विश्राम उद्धार का फायदा (लाभ) है। जो लोग पाप के बधंन और दण्ड से आज़ाद कराएं गए है उनके लिए यही उसका (परमेश्वर) उद्देश्य है। जिस प्रकार ने परमेश्वर ने सारी सृष्टि के कार्यों को पूरा करके सातवे दिन, विश्राम किया और उसकी सिद्ध उपलब्धि का जश्न मनाया तो हमें भी परमेश्वर के साथ अपने संबंध में विश्राम करना चाहिए जब हम उस कार्य को पूरा करते है जिसके लिए उसे हमें रचा

था। उसके साथ हमारी बिना बाधा वाली एकता ही है जो हमें संतुष्टि प्रदान करती है और हमारे स्वंय प्रयास और स्वंय केन्द्रित जीवन की बातों को समाप्त करती है। यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा" (मत्ती 11:28)। वह जीवन अभी आरंभ होता है और सर्वदा के लिए स्वर्ग में बना रहेगा। होने पाए कि इस जीवन में भी हम विश्राम का लुत्फ उठाए और अगले जीवन का भी। परमेश्वर की उन सभी योजनाओ को पूरा करते हुए जो उसने उसकी अद्‌भूत सृष्टि के लिए रची थी।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

पाठ तीनः अध्याय 5 और 6

विषय वाक्यः हमें परमेश्वर के सत्यों में बढ़ने के लिए बुलाया गया है, परमेश्वर ही हमारा लंगर और सारी अनन्तता के लिए सुरक्षा है।

पहला दिनः

इब्रानियों 5:1–10 पढ़े।

1. एक महायाजक के क्या चरित्र लक्षण (विशेषताएं) होती है?
2. आयत 5–10 तक से उन बातों/तरीकों को बताए, जिनके कारण यीशु किसी भी अन्य मनुष्य से बढ़कर महायाजक होने के योग्य था?
3. यीशु को महायाजक के रूप में किसने नियुक्त किया था?

दूसरा दिनः

इब्रानियों 5:10–6:3 पढ़े।

1. यीशु से अपनी पीड़ाओं/कष्टों के द्वारा क्या पूर्ण किया?
2. आपकी आज्ञाकारिता के साथ दूसरों के लिए क्या आशीष आती है?
3. आत्मिक रीति से परिपक्व होने के लिए यहाँ दी गई चेतावनी का वर्णन करो।
4. उन आरंभिक (साधारण) शिक्षाओं की सूची बनाओ, जिन्हें छोड़ना जरूरी है।

तीसरा दिनः

इब्रानियों 6:4–12 पढ़े

1. ऐसे लोगों के विवरण की सूची बनाएं जो मसीह को जानकर पीछे चले गए या हट गए।
2. आयत 7–12 में दिए गए उन कार्यों की सूची बनाओ जो उद्धार के बाद करने होते है।

चौथा दिनः

इब्रानियों 6:11–19 पढ़े।

1. क्या परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करता है (इब्रानियों 10:23 भी देखे)?
2. परमेश्वर के वायदों को प्राप्त करने के लिए हमारी क्या जिम्मेदारी है?
3. कौनसी दो चीज़े परमेश्वर हमें देता है जो कि नहीं बदलेगी (आयत 12, 15)?
4. आयत 19 में कौनसा शब्द (वचन) "आशा" की व्याख्या करता है?

पाँचवा दिनः

अध्याय 5 और 6 फिर से पढ़े

1. क्या आप अपने विश्वास में बढ़े और परिपक्व हो रहे है?
2. क्या आप कुछ ऐसे क्षेत्रों के नाम लिख सकते है, जिनमें आप बढ़ना चाहेंगे?

परमेश्वर के वायदों का थामे रखकर, हम दूसरों को आशीष देते है तथा अनन्त जीवन पाने में उनकी मदद करते है।

पाठ तीनः "मसीह और याजकपद"

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

विषय	अध्याय 5 और 6
मुख्य आयत	इब्रानियों 6:19 वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है और परदे के भीतर तक पहुंचता है।
विषय वाक्य	परमेश्वर के सत्यों में बढ़े, जो कि हमारा लंगर और सारी अनन्तता के लिए सुरक्षा है।
जीवन सिद्धांत	परमेश्वर के वायदों को थामे रखकर, हम दूसरों को आशीष देते है और अनन्त फल उत्पन्न करने में उनकी मदद करते है।

सारांशः अध्याय 5 याजकपद की व्याख्या के साथ आरंभ होता है। पुराना नियमय के याजको का बड़ा महत्त्व था, वे परमेश्वर के सामने मनुष्य का प्रतिनिधित्व करते थे। वे दोष और पाप के भार/बोझ से राहत देते थे। तौभी यीशु एक ऊँचे याजकपद के क्रम से आया था। यीशु मसीह इस्त्राएल के महायाजक की रीति से ज्यादा (ऊपर) सर्वोच्च था। पुराना नियम में इसे मलिकिसिदक के द्वारा दिखाया गया है। पुराना नियम में मलिकिसिदक का कई बार जिक्र आया है जो कि एक रहस्यमयी व्यक्ति (चरित्र) की तरह है। वह बिना पिता या माता वाला राजा था। वह यीशु मसीह का ही एक चित्रण था जिसने रोटी और दाखरख देकर अब्राहम का बलवन्त किया था, यह रोटी और दाखरस यीशु की देह और लहू को दर्शाते है। पुराना नियम के ये चिह्न नया नियम की वास्तविकता है। वे उजागर (प्रगट) है और हर तरह से बेहतर है क्योंकि ये यीशु मसीह में पूर्ण हुए थे।

अध्याय पाँच समाप्त होता है और अध्याय छह तीसरी चेतावनी के साथ आरंभ होता हैः परिपक्व न होने का खतरा। लेखक वैसे ही बोलता है जैसे कि पौलुस 1 कुरिन्थियों अध्याय 3:1–3 में वह कहता है कि वे लोग आत्मिक रीति से अपरिपक्व (बालक) है और ठोस आत्मिक भोजन को नहीं खा सकते और आत्मिक फल को नही ला सकते। वे "भले और बुरे के बीच में अंतर" करने में अयोग्य थे (5:6)। हालांकि पौलुस शारीरिक जीवन के विषय में कह रहा था, जबकि इब्रानियों का लेखक मसीह के उन बाहरी मूल्यों को संबोधित कर रहा था जिनका कोई अनन्त मूल्य (महत्व) नही था। वे विफल हो जाएंगे और ये असत्य है और वास्तविक नहीं है। सभी धार्मिक सेवाएं और बलिदान झूठे समझे जाएंगे यदि ये यीशु मसीह के ज्ञान और घनिष्ठ संबंध में बढ़ने से अलग दिखाई देते है। यदि हम विश्राम के स्थान की ओर आगे न बढ़े और केवल यीशु पर ही भरोसा न रखें तो मसीहत के ये सारे बाहरी सबूत हमारे लिए कोई प्रतिफल लेकर नहीं आएंगे। वास्तविकता में, ये श्राप के करीब और अंत में केवल जलाने के ही काम आएंगे (6:8) जबकि दूसरी तरफ सच्चा विश्वास और परिपक्वता सही लगन के रूप में खत्म होगी। हम जो कि हमारे चारों ओर हो रहे आत्मिक युद्ध में एक शराणार्थी है, हमारे सामने एक बड़ी आशा रखी गई है क्योंकि यीशु हमारे आगे गया है और एक सर्वोच्च महायाजक के रूप में हमारे लिए मध्यस्था करता है।

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

पाठ चारः अध्याय 7, 8 और 9

विषय वाक्यः यीशु का लहू हमें पिता तक पहुंच देता है।

पहला दिनः

इब्रानियों अध्याय 7:1–28 और उत्पत्ति 14:18–20 पढ़े।

1. राजा मलिकिसिदक का वर्णन करें (जो कि मसीह यीशु की तरह था)।
2. उसके बारे में कौनसी बात विचित्र/असाधारण थी?
3. अध्याय 7:20–28 में आए उन शब्दों (वचनों) की सूची बनाए, जो मसीह को हमारे याजक के रूप में वर्णन करती है।
4. मसीह का आपके लिए याजक और मध्यस्थ होने का क्या अर्थ है? (रोमियों 8:28–29 देखें)

दूसरा दिनः

इब्रानियों 7:18–28 पढ़े।

1. यीशु मसीह व्यवस्था और लेवियों के अधीन न होने के बावजूद भी एक बेहतर याजक क्यों है?
2. लेवीय याजको और हमारे याजक यीशु के बीच में क्या अंतर था?
3. यीशु को कितनी बार पाप के एक बलिदान के रूप प्रस्तुत होने की ज़रूरत है? क्यों? (1कुरिन्थियों 5:21)

तीसरा दिनः

इब्रानियों अध्याय 8 पढ़े।

1. क्या आप आज यीशु के स्थान और सेवकाई का वर्णन कर सकते है? (एक वाचा वह समझौता या वायदा होता है जो दो लोग या बहुत से लोगो के बीच में किया जाता है।)
2. पुरानी और नयी वाचा के दिशा–निर्देशों की सूची बनाए?
3. आप किस वाचा के अधीन रहना पसंद करेंगे?

चौथा दिनः

इब्रानियों अध्याय 9:1–10 पढ़े।

1. क्या आप पुरानी वाचा के अधीन कुछ सीमाओं के नाम बता सकते है?
2. कौनसी वाचा बेहतर है?
3. मसीह ने जिस मिलापवाले तम्बू में प्रवेश किया, उसका वर्णन करें।

पांचवा दिनः

इब्रानियों 9:11–28 पढ़े।

1. हमारे अनन्त छुटकारे को क्या सुरक्षित रखता है?
2. मसीह के लहू बहाने से जो आत्मिक प्रभाव पड़े, उनमे से कुछ के नाम लिखो।
3. लहू का बहाना क्यो जरूरी/आवश्यक था?
4. हम कैसे मरते है?
5. जब सब मनुष्य मरते है तो उसके बाद उनका क्या होता है?

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

प्रतिदिन परमेश्वर के निकट आए और प्रेम तथा भले कार्यों के लिए मार्गदर्शन को प्राप्त करे।

पाठ चारः "याजकीय वंशावली, वाचा, मिलापवाला तम्बू और बलिदान"

विषय	**अध्याय 7, 8 और 9**
मुख्य आयत	**इब्रानियों 9:22b, "बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।"**
विषय वाक्य	**यीशु का लहू हमें पिता तक पहुंचे देता है।**
जीवन सिद्धांत	**प्रतिदिन परमेश्वर के निकट आए और प्रेम तथा भले कार्यों के लिए मार्गदर्शन को प्राप्त करें।**

सारांशः इन तीन अध्यायों में, हम पुराना नियम के चिह्नों के बहुत से रूपों या परछाईयों को देखते है जो कि बिल्कुल स्पष्ट या साफ हो जाते है जब हम इन्हें नया नियम के साथ जोड़ते है। हम अनुष्ठानिक रिवाजों को, याजकीय वंशावली को, पुरानी वाचा को और मिलापवाले तम्बू को काफी करीब से देखते है और पाते है कि ये मसीह के कार्य और सेवकाई की सर्वोच्चता से ही संबंधित है। इन सभी बातों में, मसीह ही वह "उत्कृष्ट सेवकाई है" जो कि "बेहतरीन वायदों" पर आधारित है (8:6)।

अध्याय 7 मसीह के याजकपद की महत्त्वपूर्णता के साथ खुलता है जो कि मलिकिसिदक की रीति पर है। मलिकिसिदक का जिक्र उत्पत्ति 14:18–20, भजन संहिता और 1 कुरिन्थियों 1:30 में पाया जाता है। सचमुच वह इतिहास में एक वास्तविक व्यक्ति था, जो शालेम या यरूशलेम का राजा था (उसके नाम का अर्थ है, "शांति का राजा") जिसने विजय प्राप्ति करके लौटे अब्राहम को आशीष दी और अब्राहम से दशमांश को भी प्राप्त किया। इस तरह से वह अब्राहम से सर्वोच्च था। परन्तु, इसके साथ ही उसे अनन्त याजक के रूप में भी देखा जाता है क्योंकि इतिहास में उसके माता–पिता, जन्म और मृत्यु का लेखा नहीं पाया जाता। इसलिए यहूदी इतिहास में उसे "सर्वदा की रीति का याजक" के रूप में देखा जाता है तथा मसीह यीशु के लिए एक चिह्न और ऐतिहासिक वर्णन के लिए उपयोग किया जाता है। सभी याजक मर गए, परन्तु यीशु सर्वदा जीवित है, उसकी कोई शुरूआत नहीं और वह सर्वदा बना रहता है।

इसके अतिरिक्त, मसीह का याजकपद सर्वोच्च है क्योंकि इस्त्राएल में ऐसा कोई राजा नहीं हुआ जो एक याजक और राजा दोनों हो सके। याजकीय वंशावली हारून या लेवीय गोत्र से आती थी और राजकीय वंशावली यहूदा गोत्र से आती थी। परन्तु यीशु यहूदा की वंशावली से आया और हमारा महायाजक बन गया, "जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्थ्य के अनुसार नियुक्त हुआ।" (7:16) जो कि एक ऐतिहासिक बात और उसके संदर्भ में थी, मलिकिसिदक के भी कोई पिता या माता नहीं थे और इसलिए उसका लेवीय वंशावली से होने का कोई सबूत भी नहीं था।

मसीह की सर्वोच्चता को वाचा में भी देखा जा सकता है जो कि उसके याजकपद पर प्रभुता करती है। मूसा की वाचा अस्थाई थी और पत्थरों पर लिखी गई थी, परन्तु यह नई वाचा को स्थाई रूप से स्थापित किया गया था और मनुष्यों के हृदयों पर इसे लिखा गया था। "मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा।" (8:10) हम 8:13 से समझते है कि इस नई वाचा ने पुरानी वाचा को बेकार या अप्रयुक्त कर दिया, यह विषय/विचार यहूदी मानसिकता के लिए अपनाना बुहत कठिन था। एक बार परमेश्वर ने उसकी व्यवस्था को उसके लोगों के लिए लिखा था, और अब वह इस व्यवस्था को उनमें (उनके हृदय) लिखता है, वह उन्हें इस बात को जानने और विश्वास करने की समझ देगा, स्मरण शक्ति उन्हें याद करने के लिए और उन्हें प्रेम करने के लिए हृदय तथा उन्हें

अंगीकार करने के लिए साहस (हियाव) और उन्हें अभ्यास में लाने के लिए सामर्थ देगा। पवित्र आत्मा का बहाव (सामर्थ) इसे संभव बनाएगा।

अन्ततः मसीह की सेवकाई पृथ्वी के सभी याजको से सर्वोच्च है क्योंकि वह जीवित रहकर अपने लोगों के लिए मध्यस्था करता है और ऐसा वह स्वर्गीय तम्बू में से करता है। अब मंदिर की आवश्यकता नहीं क्योंकि अब विश्वासी ही वह मंदिर है जो परमेश्वर का निवासस्थान है। अब परमेश्वर तक हमारी पहुंच है। अब हम पाप के द्वारा छिपे या अलग नहीं है, हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के पापों को मिटा दिया गया है। हम आत्मिक और अनन्त जीवन का लुत्फ परमेश्वर की निकटता के साथ उठा सकते है (यूहन्ना 17:3)।

अध्याय 8:4–5 हमें उन चीज़ों के बारे में बताता है जो परमेश्वर ने यहाँ पृथ्वी पर स्थापित करी है वो सभी स्वर्गीय बातों/चीज़ों की "मात्र नकल या छाया" ही है। मसीह का कार्य और सेवकाई उन सभी बातों का अनन्त पूर्तिकरण है जिन्हें उसने अब्राहम और मूसा के द्वारा स्थापित करी थी। केवल वही सिद्ध याजक है और सभी के लिए एक ही बार बलिदान हुआ सिद्ध बलिदान है। और नई वाचा ने लेवीय याजकपद का स्थान ले लिया है। केवल यीशु मसीह ही सिद्ध परमेश्वर मनुष्य था जो सिद्ध मानवीय स्वभाव के साथ था तौभी वह पूर्ण रूप से ईश्वरीय गुणों से भरा हुआ था। केवल मसीह ही पापी मनुष्यों और पवित्र परमेश्वर के बीच में शांति/मेल मिलाप का लाने के योग्य है, और हमें पिता के पास लेकर आया है। वह पूर्ण रीति से उद्धार करता है और हमारे लिए मध्यस्था करने को जीवित रहता है। (7:25) क्या मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा आपके पास यह शांति है।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

पाठ पाँचः अध्याय 10

विषय वाक्यः व्यवस्था और बलिदान संबंधी रीतियां सर्वोच्च बलिदान यीशु की छाया/प्रतिछाया थे, "जो सबके लिए तथा सर्वदा के लिए एक ही बलिदान था।"

पहला दिनः

इब्रानियों 10:1–10 पढ़े।

1. व्यवस्था को यहाँ क्या कहा गया है?
2. पशुओं का बलिदान क्या चीज़ कभी नहीं हटा सकता था?
3. आयत 5–10 तक में आए 'इच्छा' शब्द को रेंखांकित करें। यहा पर किसकी इच्छा के विषय में बताया गया है? यह हमें यीशु के विषय में क्या बताता है?
4. यीशु को कितनी बार मरने की ज़रूरत थी? इसका आपके लिए क्या अर्थ है?

दूसरा दिनः

इब्रानियों 10:11–28 पढ़े।

1. इस बारे में आप क्या सोचते है कि परमेश्वर "हमारे पाप को फिर कभी स्मरण नहीं करता?" (देखे भजन संहिता 103:12 और यिर्मयाह 31:34)।
2. आप परमेश्वर की उपस्थिति में कब/कितनी बार आ सकते है?
3. इससे आपको कैसे महसूस होता है? आज परमेश्वर को इसके लिए धन्यवाद दे!

तीसरा दिनः

इब्रानियों 10:19–25 पढ़े।

1. स्वर्ग हमारे लिए कैसे खुल गया?
2. कौनसी आयत (वचन) कहता है कि मसीह का लहू हमें विवेक दोष से पवित्र करता है?
3. आयत 23–25 में हमारे लिये क्या दिशा–निर्देश है?
4. ये प्रत्येक निर्देश का आपके व्यक्तिगत जीवन में क्या अर्थ है, इसका वर्णन करे।

चौथा दिनः

इब्रानियों 10:26–31 पढ़े।

1. आयत 26 में किस प्रकार के पाप के विषय में कहा गया है और इस प्रकार के पाप के लिए क्यों कोई बलिदान नहीं है?
2. जो व्यक्ति मसीह और उसके क्रूस का इंकार करता है या उसे अस्वीकार करता है उसके साथ क्या होता है? (यूहन्ना 3:18 भी देखे)
3. क्या आपको किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत है जो अभी भी मसीह के बिना भटका/खोया हुआ है?

पांचवा दिनः

इब्रानियों अध्याय 10 पढ़े।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

1. परमेश्वर का कौनसा गुण/चरित्र आपको उत्साहित करता है? अन्य लोग कैसे आपके लिए प्रार्थना कर सकते है ताकि आप विरोध और कठिनाईयों में सुरक्षित रह सके?

जैसे हम परमेश्वर के करीब आते है और उसके वचन को हमारी नींव के रूप में रखते है, तो हम दूसरों को भी परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए प्रोत्साहित कर सकेंगे, अधिक प्रेम करे और भले कार्यों को करें जो कि परमेश्वर के राज्य में गिने जाएंगे।

पाठ पांचः "आशा"

विषय	अध्याय 10
मुख्य आयत	इब्रानियों 10:23 "आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को थामे रहे, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।"
विषय वाक्य	व्यवस्था और बलिदान संबंधी रीतियां सर्वोच्च बलिदान यीशु की छाया ये, "जो सबके लिए तथा सर्वदा के लिए एक ही बलिदान था।"
जीवन सिद्धांत	जैसे हम परमेश्वर के करीब आते है, और उसके वचन को हमारी नींव के रूप में रखते है, तो हम दूसरो को भी परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करेंगे सकेगे, अधिक प्रेम करे और भले कार्यो को करें जो कि परमेश्वर के राज्य में गिने जांएगे।

सारांशः अध्याय दस उन बातों के वर्णन को आगे बढ़ाता है जो कहता है मसीह का बलिदान सर्वोच्च है। सबसे पहला, मसीह का बलिदान इकलौता और चिरस्थायी था। "हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पाप को भी दूर नहीं कर सकते, बार–बार चढ़ाता है। परन्तु यह व्यक्ति तो पाप के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा" (10:11,12)। जब यीशु पृथ्वी पर पिता की इच्छा की अधीनता में आया और अपने आपको एक मानवीय बलिदान के रूप में बलिदान किया, क्रूस पर पापों को अपने ऊपर उठा लिया तो उसका यह कार्य अंतिम और पूर्ण था। वह सिद्ध बलिदान सभी लोगो के लिए और एक ही बलिदान सर्वदा के लिए था। बैलों और बकरियों का लहू पापों को कभी मिटा नहीं सकता था (10:3)। ये बार–बार किए जाने वाले बलिदान एक चिह्न के रूप में थे और विश्वास का एक कार्य थे जो कि आने वाले मसीहा का इंतजार कर रहे थे जो कि सबसे अंतिम और सिद्ध बलिदान होगा और वायदे को पूरा करेगा। उसकी देह ने सभी लोगों के सभी पापों के लिए एक ही बार प्रायश्चित कर लिया। जैसा कि यीशु ने अपना प्राण (आत्मा) त्यागने से पहले कहा था, उसका कार्य क्रूस पर "पूरा हुआ"। इसी कारण से वह स्वर्ग चल गया और पिता के दाहिने ओर बैठ गया। (भजन संहिता 40:6–8 पढ़े)।

दूसरी बात, मसीह के बलिदान ने पापों की क्षमा को सुरक्षित कर दिया और परमेश्वर की उपस्थिति में रहने और जीने के एक नए तरीके को खोल दिया (इब्रानियों 10:18–20)। पर्दा मसीह की देह का एक चिह्न है जिसे की तोड़ा गया और हमारे लिए परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में हियाव के साथ प्रवेश करने का मार्ग खोल दिया गया। मन्दिर का पर्दा फट गया (मरकुस 15:38)। यह पुरानी आराधना व्यवस्था के अंत और नए युग की आराधना का उद्घाटन का चिह्न/प्रतीकात्मक रूप था। यह नई आराधना बहुतायत के वायदों से भरी हुई है जिसमें एक जीवित आशा और बहुतायत का जीवन शामिल है (यूहन्ना 10:10 और 1 पतरस 1:3)। इन आशीषों को पाने के लिए, अतीत के अनुष्ठानों और धार्मिक

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

अभ्यासों की पद्धति को छोड़ना बहुत जरूरी है और हमें विश्वास के जीवन में आज्ञाकारिता के साथ चलना होगा, यह जीवन मसीह ने हमारे लिए मोल लिया/खरीदा है।

अध्याय दस इस पुस्तक की चौथी चेतावनी के साथ समाप्त होता है; पीछे चले जाने का खतरा! यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के करीब आने का अर्थ है परमेश्वर के उन उच्च/महान और आनन्दित उद्देश्यों में प्रवेश करना जो उसने आपके जीवन के लिए रखें है परन्तु परमेश्वर के नज़दीक आने से मना करना, उसका तथा उसके किए गए पूर्ण कार्य (उद्धार का कार्य) का अपमान करना है। "इसलिए अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। क्योंकि तुम्हें धीरज धरना आवश्यक है ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ" (10:35–36)। हमें अपनी बोधिताओं/अंगीकारों में निरंतर बने रहना जरूरी है तथा परमेश्वर के वचन को हमारी सारी बातों और विचारों की नींव बनने की अनुमति देना भी जरूरी है। एक–दूसरे के विषय में उत्तम बातों को ही कहने का प्रयास करना चाहिए (10:24)। हमें इसलिए बनाया गया है कि हम एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करे, उत्साहित करे और इस संसार में परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ने के लिए एक–दूसरे को प्रोत्साहित करते रहे। मज़बूत और सुरक्षित बने रहने के लिए आपके पास बहुत से कारण/वजह है। क्या आप आज परमेश्वर के करीब आने को चुनेंगे?

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

पाठ छहः अध्याय 11 और 12

विषय वाक्यः हमारे विश्वास में प्रतिदिन आगे बढ़ने के लिए अनुशासन, हमारी कमज़ोरियों को परमेश्वर को जो सामर्थी है, और अपने आपको विश्वास के परिवार के प्रति समर्पित करना भी आवश्यक है।

<u>पहला दिनः</u>

इब्रानियों 11:1–12 पढ़े।

1. अध्याय 11:1 में विश्वास को कैसे परिभाषित किया गया है?
2. लोग विश्वास के विषय में आज क्या कहते है?
3. आयत 4–12 में आए विश्वास के नायकों की सूची बनाओ और उनके विषय में एक तथ्य को भी सम्मिलित करें।

<u>दूसरा दिनः</u>

इब्रानियों 11:13–16

1. परमेश्वर के पास आने के लिए हमें किस चीज़ की आवश्यकता है? (रोमियों 5:1–2, 9–11 भी देखे)
2. जब ये विश्वासयोग्य लोग मरे तो उन्होने क्या विश्वास किया?
3. जब वे (विश्वासयोग्य लोग) जीवित थे जो उनका ध्यान किस पर केन्द्रित था?
4. आप पृथ्वी पर एक परदेशी के रूप में, एक अच्छे देश की इच्छा करते हुए कैसे जीवन जी सकते है?

<u>तीसरा दिनः</u>

इब्रानियों 11:17–40 पढ़े।

1. इन निम्नलिखित मनुष्यों ने परमेश्वर के वायदों पर अपने विश्वास को कैसे दिखायाः
    - इसहाक –
    - याकूब–
    - यूसुफ–
    - मूसा–
2. इनमें से कुछ लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया गया और कुछ लोग कैसे मारे गए?
3. पुरानी वाचा के अधीन रहे हुए लोग का विश्वास आपको किस प्रकार से नई वाचा के अधीन रहने के लिए उत्साहित करता है?

<u>चौथा दिनः</u>

इब्रानियों 12:1–3 पढ़े।

1. हमारे सामने जो दौड़ रखी गई है, उसके लिए किन चीज़ों का इंकार करना ज़रूरी है?
2. इस दौड़ को हमें कैसे दौड़ना चाहिए?
3. हमें अपनी आँखें या केन्द्र (ध्यान) को किस पर लगा कर रखना चाहिए?

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

पांचवा दिनः

इब्रानियों 12:4–29 पढ़े।

1. परमेश्वर के अनुशासन से क्या लाभ होता है? (देखे आयत 4–11)
2. कठिनाईयों में धीरज धरने के लिए मसीहियों को कौन से कार्य करने चाहिए, उनकी सूची बनाओ।
3. आयत 25 में हम कौनसी चेतावनी को देखते है?
4. इस संसार की कौनसी चीज़े हिलने योग्य है?
5. परमेश्वर की उपस्थिति और उसके आने वाले चिरस्थाई राज्य के लिए उसका धन्यवाद और स्तुति करे।

हमारे विश्वास का जीवन हमारे चले जाने के बाद भी बात करेगा।

पाठ छहः "विश्वास"

विषय	**अध्याय 11 और 12**
मुख्य आयत	**इब्रानियों 12:1 "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओं हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़े।"**
विषय वाक्य	**हमारे विश्वास में प्रतिदिन आगे बढ़ने के लिए अनुशासन, हमारी कमजोरियों को परमेश्वर को, जो सामर्थी है और अपने आपको विश्वास के परिवार क प्रति समर्पित करना भी आवश्यक है।**
जीवन सिद्धांत	**हमारे विश्वास का जीवन हमारे चले जाने के बाद भी बात करेगा।**

सारांशः अध्याय 11 को प्रसिद्ध रूप से "विश्वास का हाल ऑफ फेम" (विश्वास के नायकों का समूह) शीर्षक दिया जाता है क्योंकि इसमें हम विश्वास के उन साहसी संतो को देखते है जो हमसे पहले आये थे। यह अध्याय विश्वास की परिभाषा के साथ आरंभ होता है; कि यह आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। यह विचार रंग लेता है जब इसे वास्तविक नायकों के जीवनों के साथ चित्रित किया जाता है, जो तब भी विश्वास में अटल बने रहे जब उन्हें वह वायदा भी प्राप्त नहीं हुआ जिसकी उन्होने आशा करी थी; हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, सारा, याकूब, राहाब और बहुत से अन्य लोग। उनकी विफलताओं और कमज़ोरियों के बावजूद, उनके सताव और पीड़ाओं के बावजूद और उनके डरो के बावजूद भी वे परमेश्वर की पीछे चले और एक दृढ़ विश्वास के अनुसार कार्य किया, यह विश्वास करते हुए कि वह सच्ची और अंतिम वास्तविकता है और जो उसे सच में खोजते है वह उन्हें प्रतिफल भी देता है (11:6)। कुछ को कोड़े मारे गए, भूखा–प्यासा रखा गया, कुछ भेड़–बकरियों की खालों में छिपते हुए फिरे (36–38)। कुछ ने आग की ज्वाला को ठण्डा किया, तलवार की धार से बच निकले और अपने मरे हुओं को फिर जीवित पाया (11:34, 35)। परन्तु सभी विश्वास में मर गए, "संसार उनके योग्य न था" तौभी वे अपने स्वर्गीय देश के अभिलाषी थे (11:16, 38) वे सभी विश्वास करते हुए मर गए। वे पृथ्वी पर परदेशी थे जो एक उत्तम देश की अभिलाषाा करते थे, एक ऐसा नगर जो परमेश्वर के साथ रहने के लिए बनाया गया है। उनकी और हमारी सच्ची नागरिकता, स्वर्ग में हमारा इंतजार कर रही है (फिलिप्पियों 3:20)।

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

अध्याय 12 हमें फिर से मसीह की सर्वोच्चता की ओर वापस लेकर आता है। यद्यपि वह सभी का राजा, संसार का सृष्टिकर्त्ता है तौभी मसीह को मनुष्य के रूप में सभी सुविधा और आराम नहीं दिया गया। उसे सुन्दरता और प्रसिद्धी नहीं दी गई। उसने अपने आपको मृत्यु तक दीन रखा क्योंकि वह उस आनन्दमय प्रतिफल को जानता था जो इसके बाद उसे मिलेगा। हमारे लिए उसने बहुत सी पीड़ाओं को सहा (12:2–3), स्वंय को पिता के हाथों में सौंपा और पीड़ाओं को सहने के द्वारा आज्ञाकारिता को सीखा (5:8)। हमें भी अपने आपको पिता के हाथों में सौंपना चाहिए और उसके अनुशासन को स्वीकार करना चाहिए जब हम अपनी आँखों को यीशु मसीह की ओर लगाकर रखते है जो कि हमारे विश्वास का कर्त्ता और सिद्धक है। क्या आप अपने ध्यान को यीशु और आपकी महिमा की अनन्त आशा पर लगा कर रखते है? क्या आप उन चीज़ो को जो आपको उलझाती है और आपके विश्वास में आपको ठोकर खिलाती है, दूर करते है? क्या आप उस उद्देश्य और आज्ञाकारिता के साथ आगे बढ़ रहे है जो कि परमेश्वर ने आपके जीवन में बुलाहट के साथ दी है? परमेश्वर से मांगे/प्रार्थना करें कि वो आपको इस संसार के उन क्षेत्रों को दिखाएं जिनका आपको इंकार करना और वह अपने सत्यों को दिखाए उन बातों में जो आपको शायद धोखा दे सकती है। आप इस दौड़ को दौड़ने में दूसरों की मदद कैसे कर सकते है?

अध्याय 12 इस पुस्तक की पाँचवी और अंतिम चेतावनी के साथ समाप्त होता हैः परमेश्वर का इंकार/अस्वीकार करने का खतरा। "सावधान रहो और उस कहनेवाले से मुँह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चेतावनी देनेवाले से मुँह मोड़कर नहीं बच सकते, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी देनेवाले से मुँह मोड़कर कैसे बच सकेंगे?" (12:25)। यह निर्गमन 19 में प्रस्तुत की गई पुरानी वाचा के संदर्भ में कहा गया है, जहाँ परमेश्वर सीनै पर्वत पर उतरा और इस्त्राएल के भयभीत लोगों को अपनी आज्ञाएं दी। आयत 18 हमें बताती है कि हम पुरानी वाचा के साथ सीनै पर्वत के पास धरती की वस्तुओं के लिए नहीं आए है। बल्कि यीशु ने तो हमारे लिए स्वर्गीय दरवाज़ो को ही खोल दिया है। इसलिए हमें पवित्र परमेश्वर से एक चिरस्थाई राज्य का प्राप्त करना है जो कि परमेश्वर ने हमें एक पवित्र जीवन जीने के लिए दिया है। नई वाचा के सभी प्रयोजन (आशीषें) जो मसीह यीशु के द्वारा हमारे पास लाई गई है, वह हमें इस संसार की पीड़ाओं और दुःखों को सहने के लिए योग्य बनाती है क्योंकि इसका एक बड़ा प्रतिफल है। उसकी स्तुति करने से हम आंतरिक शाक्ति/सामर्थ को पाते है जिसके द्वारा हम निराशाओं का सामना कर सकते है, कठिन समयों में धीरज धर सकते है, परीक्षाओं का सामना कर सकते है और आशा और आनन्द को प्राप्त कर सकते है। "इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो और अपने पाँवों के लिए सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए पर भला चंगा हो जाए।" (12:12) अन्य लोग आपके जीवन और विश्वासयोग्य कार्यों को देखेंगे जो कि दूसरों को उत्साहित करेंगे कि वो भी विश्वासयोग्यता के साथ जीवित और सच्चे परमेश्वर का अनुकरण करें जो कि सभी पीढ़ियों के लिए एक समान है।

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

पाठ 7: अध्याय 13

विषय वाक्यः प्रार्थना में वायदों का दावा करना हमें उस सामर्थ को प्रदान करता है, जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए जरूरी है।

पहला दिनः

इब्रानियों 13:1–16 पढ़े।

1. हम कैसे इन कार्यो का अभ्यास में ला सकते है
   प्रेमी होना (आयत 1–3)
   पवित्र (शुद्ध) होना (आयत 4)
   वफादार (ईमानदार) होना (आयत 7–12)
   निर्भीक/साहसी होना (आयत 13–14)
   आराधक होना (आयत 15–16)

दूसरा दिनः

इब्रानियों अध्याय 13 पढ़े।

1. इन अध्याय में हमारे लिए आज दिए गए वायदों के नाम लिखो?
2. हम स्थायी घर कहाँ है?
3. आयत 17 में किस प्रकार के अगुवों का उल्लेख है?

तीसरा दिनः

इब्रानियों 13:19–21 पढ़े।

1. क्या यह ऐसी प्रार्थना है जो आप दूसरों के लिए कर सकते है?
2. इस प्रार्थना में परमेश्वर के कौनसे गुण का जिक्र है?
3. यीशु के लिए यहाँ किस नाम का इस्तेमाल किया गया है?
4. एक चरवाह अपनी भेड़ों को कैसे देखभाल करता है?
5. कौन हमें उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए सामर्थ बनाता है।
6. यह आपको कैसे उत्साहित करता है?

चौथा दिनः

इब्रानियों 13:22–25 पढ़े।

1. तीमुथियुस के विषय में यहाँ क्या अच्छी खबर है?
2. क्या आपके पास अन्य विश्वासियों को बताने के लिए कोई अच्छी खबर है?

पांचवा दिनः

इब्रानियों अध्याय 11–13 फिर से पढ़े।

1. इब्रानियों के द्वारा आपके जीवन में यीशु तथा उसके कार्यो के विषय में जो आपने सीखा है, उसकी समीक्षा/अवलोकन करें।
2. आप दूसरों से कैसी प्रार्थना अपने लिए करवाना चाहते है?

इब्रानियों
विश्वास को बनाये रखना

जैसे हम अनन्तता पर ध्यान करते है, तो परमेश्वर हमें मदद करेगा कि हम अपनी इच्छा से ऊपर उसकी इच्छा को पूरी कर पाए।

पाठ सातः "प्रेम"

विषय	**अध्याय 13**
मुख्य आयत	**इब्रानियों 13:8, "यीशु मसीह कल और आज और युगानयुग एक–सा है।"**
विषय वाक्य	**प्रार्थना में वायदों का दावा करना हमें उस सामर्थ को प्रदान करता है, जो परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए जरूरी है।**
जीवन सिद्धांत	**जैसे हम अनन्तता पर ध्यान करते है, तो परमेश्वर हमें मदद करेगा कि हम अपनी इच्छा से ऊपर उसकी इच्छा को पूरी कर पाए।**

सारांशः इब्रानियों का अंतिम अध्याय प्रोत्साहनो की एक श्रृंखला के साथ समाप्त होता है, जिसमें प्रेमी जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। हमें भाई–बहनों से प्रेम करना है, अतिथि सत्कार दिखाना है तथा जो जरूरतमंद है उनकी देखभाल करनी है। हमें विश्वासयोग्य और समर्पित जीवनसाथी होना है। हमें परमेश्वर के प्रयोजनों पर भरोसा करना है और लालच को हमारा स्वामी बनने की अनुमति नहीं देनी है। हमें अपने अगुवो का आदर करना है, मसीह की साधारण (सही) शिक्षाओं के प्रति सच्चे बने रहना है, निरंतर उसकी स्तुति करनी है और निरंतर प्रार्थना करनी है।

इब्रानियों की यह पुस्तक धीरज (सहनशीलता) के लिए बुलाहट है। लेखक चेतावनियों और विनतियों (निवेदनो) की एक श्रृंखला को प्रस्तुत करता है। "परमेश्वर के वचन पर करीब से ध्यान दो" (2:1), बड़ी सावधानी से ध्यान दो ताकि तुम भटक न जाओ" (2:1–4), "अपने विचारों को यीशु पर लगाओ" (3:1), "देखो कही तुम में से किसी के अंदर पापमय और अविश्वासी हृदय न हो, और कोई भी पाप के छल के कारण अपने हृदय को कठोर न करने पाए" (3:12–19), "आइए हम सावधान हो जाए कि हम दूर न चले जाए/वंचित न हो जाए" (4:1–3), "आइए हम विश्राम में प्रवेश करने के लिए भरसक प्रयास करें" (4:11), "जिस विश्वास का हमने अंगीकार किया है, आओ उसे हम थामे रखे। आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के करीब जाए" (4:14–16), "आओ हम मसीह की आरंभ की बातों को छोड़कर सिद्धता (परिपक्वता) की ओर बढ़ते जाएं" (6:1–3), "अंत तक उसी समान धीरज और मेहनत को दिखाए ताकि आपकी आशा सुरक्षित रहे" (6:11–12), "आओ हम परमेश्वर के नज़दीक चले" (10:19–39), "आओ हम उस दौड़ को धीरज से दौड़े जो हमारे सामने रखी गई है" (12:1), "आओ हम निरंतर परमेश्वर को स्तुति की भेंट चढ़ाते रहे" (13:15–16)। बलिदान से संबंधित अंतिम बात यहाँ पर बताई गई है। हमारे पास केवल "स्तुति का बलिदान; बांटने और भला करने" की भेंट होनी चाहिए क्योंकि जो कुछ भी आवश्यक था उसे मसीह ने पूरा कर दिया था। बलिदान का अर्थ है समर्पण, परमेश्वर के आदर और प्रेम के प्रति हमारे जीवनों को एक भेंट (बलिदान) के रूप में चढ़ाना। जो हम दे सकते है, वह उन सबके योग्य है। उसकी स्तुति हो!

इब्रानियों के अध्ययन के इस अवसर को उत्साह के साथ स्वीकार करे! यह हमें फिर से उन कहानियों को अद्भूत रूप से बताता है जो स्वंय परमेश्वर के पुराना नियम के संतों के द्वारा कही थी। यह हमें उस महान सौभाग्य की सराहना करने का अवसर देती है जो हमें उसकी एक चुनी हुई प्रजा और जाति के रूप में उसकी नागरिकता द्वारा प्रदान की गई है। अनन्त संतों के समुदायों का एक सदस्य होने के नाते, हम आनन्दित हो सकते है कि हमारी आशा सर्वदा के लिए और हमारा जीवन उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सर्वदा सुरक्षित है। आइए हम निरंतर और दृढ़ता से उस व्यक्ति को निहारते रहे

इब्रानियों

विश्वास को बनाये रखना

जिसके द्वारा यह सब संभव हो पाया वही हमारा उद्धारकर्त्ता और सभी चीज़ों को संभालने वाला है, जो हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है और वही पिता की सुन्दरता और अद्‌भूत महिमा को प्रगट करनेवाला है। एक शुद्ध विवेक और पवित्र भय के साथ उसके करीब आने के सौभाग्य को अनुभव करें।